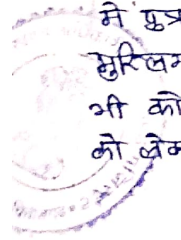


तारीख  
हुयम

हुयम या कार्यवाही मय इनिशियल जज

का कोई कानून नहीं है। निपटरी संख्या - 2 के पत्र में रामपत्र गुमास्ती के अंतर्गत की शरतीय किया है। साथ में यह भी कथन किया कि जबतक सक्षम सिविल जजालय से रामपत्र की शरतीय-नयी करामा जतात तब तक प्राथम पत्र चलने योग्य नहीं है। प्राथमिकता को मोकै पर कोई कब्जा नहीं तथा शरतीय पर शरतीय की फसल होने निपटरी में अंकित किया होने पर ही और से रामपत्र प्रस्तुत हुए पत्रावली को बहरा में नियत की जाके हुयम पत्र की बहरा को सुना गया। तबही प्राथमिकता ने अपने खलीना पत्र में अंकित कथनों को दोहराते हुए शरतीय निवेदाता जारी रखना विवेक किया गया तथा निपटरी के अतिरिक्त जे अतब में अंकित कथनों को दोहराते हुए प्राथमिकता की शरतीय किया जाने हेतु विवेक किया गया।

पत्रावली का अवलोकन किया गया परकर में यह तथ्य निवेदाता के अपने सामने आया कि शरतीय जहा रमजूर के खते दर्ज थी जो जे स्लीम, जाकिर निपटरी एवं बबली, मांगी सादुद्दीन व पीरमोहम्मद को प्राप्त हुई। दौरान बहरा प्राथमिकता की और से प्रस्तुत शपथ पत्र में मोकै पर कब्जा है अंकित नहीं है, बहरा हुकी और से क्रिसके द्वारा काशर की जा रही है अंकित-ली किया गया है। निपटरी की और से प्रस्तुत शपथ पत्र में मोकै पर निपटरी की और काशर किया जाना तथा मोकै पर निपटरी की फसल खडी होना स्पष्ट होता है। दौरान बहरा प्राथमिकता की और से कोई गामिक दृष्टान्त प्रस्तुत नहीं किया निपटरी की और से गामिक दृष्टान्त प्रस्तुत किया जिसने अंकित किया गया कि मुस्लिम विधि में पैतृक सम्पत्ति की शरतीयता का कोई प्रावधान नहीं है, साथ ही पिरा के जीवनकाल में पुत्र पुत्री को कोई अधिकार प्राप्त नहीं। मुस्लिम विधि का भी अवलोकन किया जिसमें भी कोई प्रावधान पैतृक सम्पत्ति में विरासती छु को लेकर अंकित किया हुआ नहीं है।



हुयम  
जिला-चित्तौड़गढ़

नम्बर व तारीख  
अहकाम जो इस  
हुयम की तारीख में  
जारी हुए

**FORM No. III**  
**फॉर्म अहकाम**  
**(नियम 26)**

नम्बर व तारीख, हुयम - 9413401527

उपस्थित अधिकारी हुयम  
जिला-चित्तौड़गढ़  
नाम अडिट  
6/2/2024

हुयम या कार्यवाही मय इनिशियल जज

नम्बर व तारीख  
अहकाम जो इस  
हुयम की तारीख में  
जारी हुए

इस प्रकार से प्राथमिकता का प्रथम दृष्टान्त परकर साबित नहीं होता है। प्रथम दृष्टान्त परकर होने से प्राथमिकता को अस्तुविधा देना, शरतीय मुस्तान होना स्पष्ट नहीं होता है शरतीय कथन प्राथमिकता का प्राथमिक पत्र अन्तर्गत चारा 22 शरतीय एक शरतीय निवेदाता के शरतीय का शरतीय कर शरतीय किया जाता है। निवेदाता खुले न्यायालय में विश्वास जाकर सुनाया गया। पत्रावली केसल सुमार होकर शरतीय से कम है।

उपस्थित अधिकारी  
हुयम  
जिला-चित्तौड़गढ़

